International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-07-2020; Accepted: 05-08-2020; Published: 21-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 114-115

प्राचीन कालीन शिक्षा में शिक्षकः छात्र संबंध व आधुनिक काल में शिक्षकः छात्र संबंधों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना

Pratibha Jain
Assistent Professor, DR.Vijai Lall Smriti Mahavidhyalaya Damoh, Madhya Pradeh, India

सारांश
प्राचीन काल से शिक्षक (गुरु) छात्र के संबंध को सर्वोपरि रखा गया है। शिक्षक और छात्र का संबंध वास्तव में ही बहुत अमूल्य है अभिभावक भले ही बच्चे को जन्म देते है किंतु उन्हें जीवन जीने की कला गुरु या षिक्षक ही सिखाता है बस जरुरत है छात्र षिक्षक के संबंध को सही दिषा में आगे बढ़ाने की।
यह भी सत्य है कि एक योग्य शिक्षक से कठिन परिश्रम की प्रेरणा मिल सकती है इसके लिये शिक्षक छात्र संबंधों में प्रेम एवं आदर का भाव होना आवष्यक है, नई पीढ़ी को षिक्षित सभ्य बनाने के लिये षिक्षक छात्र को संबंधों को गरिमा प्रदान करने की विषेष आवष्यकता है।

मूल शब्दः भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावना
यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान शीष दिये यदि गुरू मिले तो भी सस्ता ज्ञानश हमारी भारतीय संस्कृति में षिक्षक का अपना अलग

1. आदर्ष रहा है। जिस प्रकार सिर के बिन धड़ का, मन के बिन तल का, जड़ के बिना वृक्ष कोई महत्व नहीं होता उसी प्रकार जीवन में षिक्षक के बिना जीवन की कोई सार्थकता नहीं होती है। कहा भी गया है कि जिसके जीवन में षिक्षक नहीं उसका जीवन शुरू नहीं। जब षिक्षक की आषीष मिलती है और शिष्य का समर्पण होता है तभी उन्नति के सर्वोच्च शिखर की प्राप्ति होती है। षिक्षक के आषीर्वाद से जीवन परिवर्तित होता है। षिक्षक क्या है ? जो अंधकार से प्रकाष की ओर ले जाये, अज्ञान से ज्ञान की ओर जाये, गढ्ढों से सुरक्षित जगह ले जाये।

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः

परिवर्तन प्रकृति का नियम है सामाजिक व्यवस्था, राज्य व्यवस्था और सांस्कृतिक समझ के परिवर्तन के फलस्वरूप षिक्षक एवं छात्रों के संबंधों में भी समय के अनुसार परिवर्तन होते रहे है। भारतीय संस्कृति में जहां षिक्षक का सर्वोपति स्थान था उसका स्तर मध्यकाल में बहुत नीचे आ गया तथा वर्तमान क्रमषः ह्रास की ओर बढ़ रहा है। यदि उसके पतन के कारणों पर विचार करें तो सपष्ट प्रतीत होता है कि इसके पीछे षिक्षा का व्यवसायीकरण, षिक्षक की बढ़ती हुई महत्वकांक्षायें और बढ़ती हुई भौतिक सुविधाओं की अभिलाषा कुछ है। इन कारणों से षिक्षक की गरिमा कम हुई हैं। वर्तमान समय में छात्रों में अनुषासनहीनता असामाजिक प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर हो रही जिसका मूल कारण षिक्षक एवं छात्रों में मधुर संबंधों की कमी एवं पारस्परिक समझदारी का अभाव है।
भारत में शिक्षक की पंरपरा अनादि काल से चली आ रही है। षिक्षक वह पथप्रदर्षक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। षिक्षकों का कार्य बहुत कठिन है। महत्वपूर्ण गुरू ही नई पीढ़ी को सही मार्गदर्षन देकर समाज और देष के लिए नई पीढ़ी तैयार करते है, उनका सम्मान करना हम सबके लिए गौरव की बात है।
भारतीय संस्कृति में षिक्षक को दो स्वरूपों में देखा जाता था जिन्हें आध्यात्मिक व लौंकिक गुरू के रूप में परिभाषित किया गया।
वर्तमान की जड़े अतीत में विद्यमान रहती है। भारत का अतीत गौरवमय रहा है। प्राचीन काल के ग्रंथों में अषिक्षित मनुष्य को विद्या विहीन पषु कहा गया। षिक्षा ज्ञान है और मनुष्य का तीसरा नेत्र है, प्राचीन षिक्षा पंरपरा का आधार समाज–ऋण चुकाना था।

2. **समस्या कथा :–** प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत प्राचीन कालीन षिक्षा में षिक्षक छात्र संबंध व आधुनिक कालीन शिक्षा में षिक्षक छात्र संबंध के प्रति अभिभावकों की मनोवृत्ति का अध्ययन करना, समस्या कथन के रूप में लिया हैं।
3. **क्षेत्र :–** प्रस्तुत शोध कार्य हेतु मध्यप्रदश के दमोह शोध कार्य को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है। इस शोध कार्य में दमोह शहर चार स्कूल सरकारी व प्राईवेट विद्यालय जो माध्यमिक शिक्षा मण्डल व सेन्ट्रल बोर्ड से मान्यता प्राप्त हैं।
4. **उद्देष्य :–** प्रस्तुत शोध कार्य में शोध कर्त्ता द्वारा निम्नांकित उद्देष्य निर्धारित किये जाएं।
   1. छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण में षिक्षक छात्र संबंधों के प्रभाव का अध्ययन करना।
   2. षिक्षक व छात्र संबंधों पर प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
   3. षिक्षक व छात्रों के संबंधों में अभिभावकों के व्यवहार का अध्ययन करना।
   4. शिक्षक छात्र संबंधों में षिक्षक की प्रभावषीलता का अध्ययन करना।
   5. शिक्षक छात्र संबंधों में षिक्षकों की अकादमिक योग्यता एवं विषय से संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना।
   6. शिक्षक छात्र संबंधों पर व्यक्तिगत भिन्नता प्रभावित करती है, अध्ययन करना।
   7. अध्ययन अध्यापन के दौरान छात्र एवं षिक्षक के मध्य

अंतः क्रिया के महत्व को जानना।

5. **परिकल्पना**

1. षिक्षक छात्र संबंधों का प्रभाव छात्र के व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है।
2. प्रतिकूल परिस्थितियाँ षिक्षक छात्र संबंधों पर विपरीत प्रभाव डालती है।
3. अभिभावकों का व्यवहार षिक्षक छात्र संबंधों पर विपरीत प्रभाव डालता है।
4. षिक्षक की योग्यता व विषय का ज्ञान षिक्षक छात्र संबंधों को प्रभाव डालता हैं।
5. षिक्षक छात्र संबंधों पर व्यक्तिगत भिन्नता पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन न करना।
6. षिक्षक छात्र संबंधों पर षिक्षक का व्यवहार व उसकी प्रभावषीलता का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जाता हैं

1. प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम में षिक्षक छात्र संबंधों में सुधार के लिए इसकी आवष्यकता है। अध्ययन के द्वारा उस स्थिति का पता लगाया जा सकता हैं।
2. शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन की आवष्यकता इसीलिए भी महसूस की गई कि षिक्षा का स्तर तेजी से गिर रहा है जिससे षिक्षक छात्र संबंधों पर गिरावट आयी है जिसमें सुधार की आवष्कता हैं।
3. षिक्षक छात्र संबंधों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति कैसी है। उन कारणों को जानने के लिए अध्ययन की आवष्यकता महसूस की गई।
4. छात्रों में समाजीकरण का उचित विकास विद्यालय में ही होता है। उचित विकास के लिए अच्छे वातावरण की आवष्कयता हैं।

6 शोध विधि

शोध हेतु चयन किया गया प्रत्येक विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। अतः शोध कार्य को प्रारम्भ करने से लेकर पूर्ण करने तक अत्यन्त सावधानी रखना आवष्यक है। शोध कार्य की सफलता उपयोगी विधि पर निर्भर करती हैं। यद्यपि यह शोध कार्य के प्रकार पर भी निर्भर करती हैं।

शोधकर्त्ता द्वारा शोध हेतु चुने गए विषय षिक्षक–छात्र संबंधों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन दमोह जिले के संदर्भ के लिये सर्वेक्षण विधि सर्वथा उपयुक्त मानी गई है।

अतः शोध कर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि के रूप में अपनाया गया हैं। इस विधि के माध्यम में अभिभावकों से साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त होता है एवं इस विधि द्वारा प्राप्त परिणाम अन्य विधियों की अपेक्षा विष्वसनीय माने गए। इस विधि में साक्षात्कार देने वाले एवं साक्षात्कार लेने वाले एक दूसरे से प्रत्यक्ष संवाद करते हैं। अतः शोध की विष्वनीयता अधिकतम होती हैं।

1- <u>शोध उपकरण :–</u> शोधकर्त्ता द्वारा जिन अनुसूचियों का शोध कार्य में प्रयोग किया गया वे निम्न है :–

<u>1-</u> साक्षात्कार प्रष्नावली

<u>2-</u> संस्थागत प्रष्नावली

1. प्रदत्तों का संग्रहण सरलता से करने के लिए साक्षात्कार प्रष्नावली का निर्माण किया गया।
2. प्रष्नों की भाषा सरल एवं स्पष्ट रखी गई जिसे आसानी से समझा जा सके।
3. प्रष्नों की संख्या सीमित हैं।
4. शोधकर्त्ता द्वारा छोटे प्रष्नों का निर्माण किया गया।

शोध कार्य हेतु अध्ययन क्षेत्र के संग्रहण में कुल चार विद्यालय लिए गए है जिसमें सरकारी व निजी विद्यालय सम्मिलित है जिससे शोधकर्त्ता द्वारा प्रष्नावली तैयार की गई जिसे साक्षात्कार द्वारा भरा गया है।

2- शब्दों का परिभाषीकरण

शोधकर्त्ता ने अपने शोधकार्य को षिक्षक व छात्र संबंधों की महत्ववता को स्पष्ट करने के लिए एवं षिक्षक छात्र संबंधों में मधुरता लाने के निम्न शब्दों का उपयोग किया गया हैं। उनका स्पष्टीकरण निम्न रूप से परिभाषित किया गया है।

प्राचीन काल में षिक्षक छात्र संबंध

भारत के प्राचीन इतिहास में ऐसे विद्यालयों का बहुत महत्व था। प्रसिद्ध आचार्यो के गुरूकुल के पढ़े हुए छात्र का सब जगह सम्मान होता था। गुरूकुलों के इतिहास में भरत की षिक्षा व्यवस्था और ज्ञान विज्ञान की रक्षा का इतिहास समाहित था। भारत की प्राचीन षिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। प्राचीन काल में षिक्षा को अत्याधिक महत्व दिया गया। भारत विष्वगुरू कहलाता था। भारतीय षिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा ही गौरव का था। आचार्य धर्म, बुद्धि से निःषुल्क षिक्षा देते थे। विद्यार्थी गुरू का सम्मान और आज्ञा का पालन करते थे। छात्र और षिक्षकों का आपसी संबंध प्रेम और सम्मान का था। गुरू को भगवान का दर्जा दिया जाता था।

कहा भी गया हैः–
श्गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय,
बलिहारी गुरू आपकी गोविंद दियो बताय।श

गुरू षिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। गुरू शब्द का अर्थ है अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने वाला ज्ञान रूपी प्रकाष।

प्राचीन काल में गुरू और षिष्य के संबंधों का आधार था गुरू का ज्ञान, मौलिकता और नैतिक बल, उनका षिष्यों के प्रति स्नेह भाव तथा ज्ञान बांटने का निस्वार्थ भाव। षिष्यों में होती थी मुझ के प्रति पूर्ण श्रद्धा। गुरू की क्षमता में पूर्ण विष्वास तथा गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण एवं आज्ञाकारिता, अनुषासन षिष्य का सबसे महत्वपूर्ण गुण माना जाता है। उनका विष्वास था गुरू उसका कभी अहित नहीं सोच सकता इसलिए गुरू के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

आधुनिक काल में षिक्षक छात्र संबंध

आज का समाज अधिक जागरूक है। किसी गुरू के द्वारा किसी षिष्य के प्रति आज ऐसा अन्याय हो जाए और समाज उसका विरोध न करे। आज यह संभव नहीं, आज ज्ञान के प्रसार के साधन बहुत बढ़ गए है। छात्रों का बौद्धिक स्तर बढ़ गया है। आज का छात्र जागरूक है। यदि षिक्षक छात्र की जिज्ञासा का उचित समाधान नहीं कर पाता तो छात्र का आदर खो देता है, आज भौतिकवादी समाज में ज्ञान से अधिक धन को महत्व दिया जाता है। आज छात्र षिक्षक का संबंध भी उपभोक्ता और सेवा प्रदाता का होता जा रहा है। छात्रों के षिक्षा के लिए गुरूओं से प्राप्त होने वाले ज्ञान के बजाय धन से खरीदी जाने वाली वस्तु मात्र बन कर रह गयी है। इससे षिष्य की गुरू के प्रति अगाध श्रद्धा और गुरू का छात्र के प्रति स्नेह और संरक्षकभाव लुप्त होता जा रहा है।

अभिभावक :– अभिभावक शब्द से तात्पर्य ऐसे बालकों के माता–पिता से है जिनके बालक व बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत है। प्रत्येक माता–पिता यह चाहते है कि उसके बच्चे संस्कारयुक्त षिक्षा प्राप्त करे। ज्ञान की षिक्षा के साथ व्यवहारिक

ज्ञान की षिक्षा प्रदान की जाए, बड़ों का आदर व अपने गुरू का सम्मान करना सीखें।

अभिवृत्ति : यह एक सरल विधि है। इसके माध्यम से व्यक्ति के विष्वास को ज्ञात किया जाता है। यह सूचना प्राप्त करने का रूप पत्र है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के विष्वास को ज्ञात करकने का प्रयास किया जता है। यह प्रति व्यक्ति की आंतरिक अनुभूति है। घटना व वस्तु के प्रति व्यक्ति के माध्यम से स्वयं व्यक्त किया जाता है। अतः वास्तविक अभिवृत्ति को ज्ञान करना कठिन होता है।

अतः शोधकर्त्ता को प्रष्नावली आदि विधियों के द्वारा उसके मत को ज्ञान का अभिवृत्ति के विषय में अनुमान लगाया जाता है।

न्यादर्ष :– न्यादर्ष के रूप में दमोह जिला चार विद्यालयों का यादृच्छिक न्यादर्ष पद्धति के अनुसार चयन किया गया है। जिसमें अभिभावकों की अभिवृत्ति को ध्यान में रखकर षिक्षक छात्र संबंधों के व्यवहार का अध्ययन किया गया।

न्यादर्ष का वितरण

क्रं.	अभिभावक	न्यादर्ष का प्रकार	संख्या अभिभावक की सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रतिषत
1	सरस्वती षिषु मंदिर	50	75%
2	महर्षि विद्या मंदिर	50	65%
3	सेन्ट जॉन्स स्कूल	50	25%
4	अग्रवाल स्कूल	50	35%
	कुल योग	**200**	

3- विश्लेषण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन दमोह जिले के विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं का षिक्षक छात्र संबंधों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति अध्ययन का केन्द्र था। अध्ययन का उद्देष्य यही था कि हम षिक्षक छात्र संबंधों के प्रति अभिभावक के व्यवहार का अध्ययन करें। प्राप्त परिणामों के विष्लेषण से जो निष्कर्ष सामने आए है उन्हें निम्नानुसार दर्षाया गयाः–

1. षिक्षक छात्र संबंधों के प्रति अभिभावकों का सकारात्मक दृष्टिकोण है।
2. विभिन्न स्कूलों के छात्र, छात्राओं के संबंधों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने से ज्ञान हुआ है उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक है।
3. जिन विद्यालयों में संस्कारयुक्त षिक्षा प्रदान की जाती है। षिक्षक छात्र संबंध अच्दे है। अभिभावक की अभिवृत्ति भी सकारात्मक है।
4. जिन विद्यालयों में केवल सैद्धांतिक षिक्षा पर ध्यान दिया जाता है वहाँ षिक्षक छात्र संबंध अच्छे नहीं होते है। अभिभावकों की अभिवृत्ति कुछ नकारात्मक होती है।

4- सुझाव :– षिक्षक–छात्र संबंध को बेहतर बनाने हेतु निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दिया जा सकता है :–

1. शासन द्वारा चलाई गई योजनाओं को ईमानदारी से लागू करना चाहिए।
2. शिक्षकों को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
3. प्रत्येक छात्र के सुख दुःख का ध्यान रखते हुये सहिष्णुता रखनी चाहिए।
4. शिक्षक एवं छात्रों में जितना आपसी संबंध घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण सदभावनामयी होगा तो षिक्षा का स्तर उतना ही उन्नत होगा।
5. षिक्षक का षिक्षण कार्य प्रभावपूर्ण होना चाहिए।
6. षिक्षक – छात्र के मध्य प्रभावी सम्प्रेषण होना चाहिए।
7. षिक्षक प्रषिक्षण के दौरान छात्र अध्यापकों को इस तरह प्रषिक्षित किया जाए कि से सीमित संसाधनों में भी प्रभावी षिक्षण कार्य को पूर्ण कर सकें।
8. षिक्षक छात्र संबंधों में अभिवाकों के व्यवहार को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
9. षिक्षकों को प्रषिक्षण मेडीटेषन सिखाया जाये।
10. षिक्षक अपने व्यवहार व बातचीत को सदैव मर्यादित रखे जिससे छात्र उन्हें देखकर संतुलित व्यवहार करना सीखेगें।।
11. छात्र को गरिमा प्रदान करें ताकि उनमें आत्मसम्मान की भावना विकसित हो।

एक खुषहाल स्वस्थ और सम्पन्न समाज और देष के निर्माण के लिए षिक्षा पहली आवष्यकता है। षिक्षक का दर्जा हमेषा से ही समाज में पूज्यनीय रहा हैं। हमें हमेषा ही उसका आदर करना चाहिए।

आज के इस दौर में कदम फूंक–फूंक कर रखना जरूरी हो गया है। इस पवित्र रिष्ते को बचाने के लिये छात्रों को हृदय में जगह खाली करने की आवष्यकता है। छात्र अपनी बुरी आदतों, घृणा, द्वेष की भावनाओं को षिक्षक के चरणों में समर्पित कर दें और श्रृद्धा एवं समर्पण से ज्ञान की ज्योति के प्रकाष में स्वयं को प्रकाषित कर सकता है। ऐसा जिस दिन हो जायेगा हमारी प्राचीन गौरवषाली परम्परा को लौटने में वक्त नही लगेगा।

संदर्भ सूची

1. षिक्षा के सामाजिक स्तर समस्याएं एवं मुद्दे – रामषकल पाण्डे
2. उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षा– डी. एल. ार्मा, एन.आर. स्वरुप सक्सेना
3. अनुसंधान की विधियां – आर.ए. शर्मा, पारसनाथ
4. अनुसंधान की विधियां – डॉ. ए.बी. भट्नागर
5. षिक्षा और भारतीय समाज– राधा प्रकाषन